SHIKSHA SAMVAD
International Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 2584-0983 (Online)
© Shiksha Samvad|Volume-03| Issue-01| September- 2025
Available online at: https://shikshasamvad.com/
DOI:

गढ़वाली भाषा और व्याकरण

(पुस्तक समीक्षा)

डॉ० हरीश कुमार यादव
प्रवक्ता, अध्यापक शिक्षा विभाग
रामचंद्र उनियाल राजकीय स्नातकोतर महाविद्यालय उत्तरकाशी, उत्तराखंड,
Email: yadavh101@g mail.com

- **लेखक** : सुरेश ममगाईं
- **प्रकाशक** : विनसर पब्लिशिंग कंपनी, देहरादून
- **प्रथम प्रकाशन वर्ष** : वर्ष-2016
- **वर्तमान संस्करण** : वर्ष 2025 (संशोधित एवं परिवर्धित संस्करण)
- **पृष्ठ संख्या** : 260
- **मूल्य** : रुपये 225.00
- **ISBN संख्या**: 978-93-82830-44-3
- **भाषा**: हिंदी / गढ़वाली
- **विषय**: भाषा-विज्ञान, व्याकरण, गढ़वाली भाषा अध्ययन

"गढ़वाली भाषा और व्याकरण" सुरेश ममगाईं द्वारा रचित एक महत्वपूर्ण ग्रंथ है, जो न केवल गढ़वाली भाषा की व्याकरणिक संरचना को प्रस्तुत करता है, बल्कि उसके सैद्धांतिक आधार, सामाजिक संदर्भ, और सांस्कृतिक पहचान को भी विस्तार से स्पष्ट करता है। जिसमें भाषा को केवल अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं, बल्कि सामाजिक चेतना और बौद्धिक विमर्श का औज़ार माना गया है।

सुरेश ममगाईं गढ़वाल के रिक्साळ ग्राम में जन्मे विद्वान हैं। हिन्दी, उर्दू, फारसी व असमिया सहित कई भाषाओं में दक्षता प्राप्त की। उन्होंने गढ़वाली भाषा, साहित्य और संस्कृति पर अनेक महत्वपूर्ण ग्रंथ लिखे हैं। वर्तमान में वे उत्तरकाशी में अध्यापन कर रहे हैं एवं निरंतर अनुसंधान की दिशा में उन्मुख है। सुरेश ममगाईं गढ़वाली भाषा के एक समर्पित विद्वान, भाषाविद और सामाजिक चेतना से जुड़े चिन्तक हैं। वे वर्षों से गढ़वाली भाषा के व्याकरणिक और सैद्धांतिक पक्षों पर कार्य कर रहे हैं। इस पुस्तक के माध्यम से उन्होंने गढ़वाली भाषा की सांस्कृतिक आत्मा, संरचना और सामाजिक भूमिका का गंभीर विवेचन प्रस्तुत किया है।

यह पुस्तक गढ़वाली भाषा की **व्याकरणिक संरचना** को समझने और स्थापित करने का प्रयास है। लेखक ने इसे केवल व्याकरणिक नियमों की सूची नहीं बनाया है, बल्कि इसे **सांस्कृतिक, दार्शनिक और सामाजिक विमर्श** का हिस्सा भी बनाया है। उत्तर-आधुनिक दृष्टिकोण अपनाते हुए लेखक ने व्याकरण को एक **"पाठ"** के रूप में देखा है, जिसकी व्याख्या समय, स्थान और पाठक के अनुसार भिन्न हो सकती है। पुस्तक 14 अध्यायों

में विभक्त है, जिनमें भाषा-बोली से लेकर पद-परिचय, वाक्य-रचना, संधि-विचार, मुहावरों और लोकोक्तियों तक का गहन विश्लेषण है। अंत में परिशिष्ट के रूप में अलंकार, छंद और परिगणन से जुड़ी उपयोगी सामग्री दी गई है।

अध्याय-1: भाषा और बोली

इस अध्याय में लेखक भाषा और बोली की अवधारणा को स्पष्ट करता है। इसमें बताया गया है कि भाषा संप्रेषण का सशक्त माध्यम है जो मनुष्य को अन्य प्राणियों से भिन्न बनाता है। बोलियाँ सामाजिक, सांस्कृतिक व राजनीतिक कारणों से विकसित होकर भाषा का रूप लेती हैं। यह अध्याय भाषाई विकास की प्रक्रिया को सरलता से समझाता है।

अध्याय-2: गढ़वाली भाषा : उद्भव और विकास

इस अध्याय में लेखक द्वारा गढ़वाली भाषा के उद्भव और विकास की गहन विवेचना की है। इसमें विभिन्न भाषाशास्त्रीय मतों के आधार पर गढ़वाली भाषा के शौरसेनी अपभ्रंश, खश और दरद भाषाओं से संबंध को रेखांकित किया गया है। मध्यदेशीय भाषिक प्रभाव और 'उकार बहुलता' जैसे विशिष्ट लक्षणों के माध्यम से इसकी ऐतिहासिक यात्रा को स्पष्ट किया गया है। भाषा का विकास क्रम, सामाजिक लोकजीवन और ऐतिहासिक स्रोतों के माध्यम से पाठकों को गढ़वाली की भाषाई समृद्धि और विविधता से परिचित कराता है। यह अध्याय गढ़वाली भाषा को एक ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और भाषा वैज्ञानिक दृष्टिकोण से समझने का अवसर देता है।

अध्याय-3: गढ़वाली भाषा का क्षेत्र और उसकी बोलियाँ

गढ़वाली भाषा का क्षेत्र और उसकी बोलियाँ' अध्याय में लेखक ने एक गढ़वाली सांस्कृतिक यात्रा को प्रस्तुत किया है, जो गढ़वाली भाषा की विविधता, विकास और क्षेत्रीय विशेषताओं को उजागर करता है। यह भाषा को एक जीवंत, बहुरूपीय धरोहर के रूप में प्रस्तुत करता है, जहाँ भूगोल, समाज और संस्कृति मिलकर भाषा को गढ़ते हैं। यह अध्याय भाषिक सौंदर्य का साहित्यिक मानचित्र है।

अध्याय-4: वर्ण-विचार

लेखक ने 'वर्ण-विचार' अध्याय में भाषा के गूढ़ रहस्यों को उजागर किया है, यह वर्णों को ध्वनि से आगे बढ़कर सृजन के बीज के रूप में दिखाता है। वेदों से गढ़वाली व्याकरण तक की यात्रा में यह अध्याय भाषा को एक सांस्कृतिक चेतना के विकासात्मक रूप में प्रस्तुत करता है—जहाँ व्याकरण अनुशासन नहीं, जीवनदृष्टि बन जाता है।

अध्याय-5: वर्तनी-विचार

लेखक द्वारा इस अध्याय में गढ़वाली भाषा की वर्तनी, लिपि और लेखन की आवश्यकता पर विचार किया गया है। लेखक ने मौखिक ध्वनियों के लिखित रूपांतरण की प्रक्रिया, स्वनिम और लेखिम के संबंध तथा लिपि के संरक्षणात्मक महत्व को स्पष्ट किया है। यह भाषा के स्थायित्व और प्रसार को समझाने में सहायक है।

अध्याय-6: संधि-विचार

'संधि-विचार' अध्याय में लेखक ने गढ़वाली भाषा के स्वाभाविक प्रवाह में संधि की सूक्ष्म क्रियाओं को उजागर करता है। स्वर और व्यंजन के मेल से उत्पन्न लयात्मकता को यह गढ़वाली संदर्भ में गहराई से समझाता है। यह अध्याय प्राचीन संस्कृत भाषा के भाषिक मानदंडों के जटिल जाल से अभिमुक्त, जन भाषा के स्पंदन में संधि का दर्शन कराता है।

अध्याय-7: गढ़वाली भाषा और उसका शब्द-भंडार

गढ़वाली भाषा और उसका शब्द-भंडार अध्याय में लेखक गढ़वाली भाषा के शब्द-भंडार का वैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। इसमें शब्दों की परिभाषा, उनके स्रोत, रचना और अर्थ के आधार पर वर्गीकरण किया गया है। साथ ही, शब्द-निर्माण की विविध प्रक्रियाओं को उजागर करते

हुए भाषा की निरंतर समृद्धि और विकास को दर्शाया गया है। गढ़वाली भाषा में नए शब्दों की रचना एवं अवधारणा कैसे होती है- प्रस्तुत अध्याय की विलक्षणता है।

अध्याय-8: शब्द रचना: उपसर्ग, प्रत्यय, समास, स्थानीय शब्दावली

यह अध्याय गढ़वाली भाषा की शब्द-रचना प्रक्रिया का विश्लेषण करता है। इसमें उपसर्ग, प्रत्यय, समास, स्थानीय शब्दावली तथा अनुकार, प्रतिचर, निरर्थक युग्म जैसे तत्वों पर प्रकाश डाला गया है। भाषिक स्रोतों और ध्वन्यात्मक विविधताओं के माध्यम से गढ़वाली शब्द-भंडार की सृजनात्मकता और निरंतर विकास को दर्शाया गया है।

अध्याय–9: गढ़वाली भाषा का व्याकरणिक स्वरूप

लेखक द्वारा यह अध्याय गढ़वाली भाषा की शब्द-रचना प्रक्रिया का विश्लेषण करता है। इसमें उपसर्ग, प्रत्यय, समास, स्थानीय शब्दावली तथा अनुकार, प्रतिचर, निरर्थक युग्म जैसे तत्वों पर प्रकाश डाला गया है। भाषिक स्रोतों और ध्वन्यात्मक विविधताओं के माध्यम से गढ़वाली शब्द-भंडार की सृजनात्मकता और निरंतर विकास को दर्शाया गया है।

अध्याय–10: पदबंध, अन्वय, पदक्रम और अध्याहार

इस अध्याय में लेखक ने गढ़वाली भाषा की वाक्य-रचना संबंधी महत्त्वपूर्ण अवधारणाओं—पदबंध, अन्वय, पदक्रम और अध्याहार—का स्पष्ट विश्लेषण किया गया है। पदबंध के माध्यम से कई शब्द एक अर्थपूर्ण इकाई बनाते हैं, जबकि अन्वय व्याकरणिक सामंजस्य को स्पष्ट करता है। गढ़वाली का सामान्य पदक्रम "कर्त्ता+कर्म+क्रिया" है, जो भाषा की संरचना को निर्धारित करता है। अध्याहार की प्रक्रिया वाक्य में अप्रकट लेकिन निहित पदों को अर्थ की सहायता से स्पष्ट करती है, जिससे भाषिक संप्रेषण में रोचकता और अर्थ की गहराई बनी रहती है। यह अध्याय गढ़वाली व्याकरण की बारीकियों को समझने में सहायक है और भाषिक विश्लेषण में गहनता जोड़ता है।

अध्याय–11:पद-परिचय

इस अध्याय में लेखक ने 'पद-परिचय' की संकल्पना को सरल और स्पष्ट रूप में प्रस्तुत किया गया है। शब्दों के व्याकरणिक विश्लेषण द्वारा संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया आदि आठ पद-प्रकारों की पहचान कराई गई है। यह गढ़वाली भाषा के शुद्ध प्रयोग और व्याकरणिक समझ को विकसित करने में सहायक सिद्ध होता है।

अध्याय–12:वाक्य-रचना

इस अध्याय में लेखक ने वाक्य की संरचना, तत्वों और प्रकारों को स्पष्ट करता है। गढ़वाली भाषा में व्याकरणिक नियमों को व्यावहारिक उदाहरणों द्वारा सरलता से समझाकर शिक्षार्थियों के लिए उपयोगी बनाया गया है।

अध्याय–13: वाक्य-विश्लेषण, वाक्य-संश्लेषण, वाक्य-रूपांतरण

लेखक ने इस अध्याय में गढ़वाली वाक्य-विश्लेषण, संश्लेषण और रूपांतरण की व्यवस्था को स्पष्ट किया है, जिससे गढ़वाली भाषा में वाक्य-संरचना की समझ सुदृढ़ होती है।

अध्याय–14: गढ़वाली में प्रयुक्त मुहावरे, लोकोक्ति, बुझौवल

लेखक द्वारा इस अध्याय में गढ़वाली लोकवासियों द्वारा प्रयुक्त मुहावरों, लोकोक्तियों व बुझौवलों की परम्पराओ, मान्यताओ और सांस्कृतिक महत्ता को दर्शाता गया है, जो गढ़वाली लोक-जीवन की गूढ़ अनुभूतियों और व्यावहारिक ज्ञान को उजागर करते हैं।

परिशिष्ट

पुस्तक का यह खंड अलंकार, छंद और शब्द-सूची, गणना, माप व परिगणन जैसे प्रयोग गढ़वाली भाषा की साहित्यिक समृद्धि को दर्शाते हैं।

© Shiksha Samvad| Received: 03 September 2025 | Accepted: 06 September 2025 | Published: 11 September 2025

पठनीय पुस्तकें

पठनीय पुस्तकों की सूची से ज्ञात होता है कि यह पुस्तक गढ़वाली भाषा, हिंदी भाषा, भाषा-विज्ञानं, गढ़वाली लोक-संस्कृति एवं लोक-साहित्य पर आधारित प्रामाणिक ग्रंथों और शोध-कार्य पर आधारित है, जो पुस्तक की विश्वसनीयता को अधिक बढ़ाते हैं।

इस पुस्तक का उद्देश्य गढ़वाली भाषा की व्याकरणिक संरचना को सैद्धांतिक और अनुप्रयुक्त रूप में प्रस्तुत करना है। यह पुस्तक केवल व्याकरणिक नियमों का संग्रह नहीं बल्कि गढ़वाली समाज की चेतना, संस्कृति और भाषाई विकास का गहराई से विश्लेषण करने वाला ग्रंथ हैं। ग्रंथ में गढ़वाली भाषा की वैज्ञानिक व्याख्या, व्याकरण को सामाजिक न्याय और सांस्कृतिक अस्मिता से जोड़ने तथा इसे अनुसंधान, शिक्षा और संवाद की भाषा के रूप में स्थापित करने का प्रयास किया गया है। इस पुस्तक में गढ़वाली भाषा की व्याकरणिक संरचना को जिस गहराई और गंभीरता से प्रस्तुत किया गया है, वह उल्लेखनीय है। लेखक सुरेश ममगाईं, गढ़वाली भाषा, साहित्य और संस्कृति के गंभीर अध्येता हैं, जिनकी दृष्टि न केवल भाषिक संरचना तक सीमित है, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक चेतना से भी गहराई से जुड़ी हुई है। पुस्तक की भाषा सहज, विद्वतापूर्ण और शिल्प सुगठित है, जिससे जटिल विषय भी बोधगम्य हो जाते हैं। शोधपरकता और संदर्भ सामग्री की गुणवत्ता इस कृति को एक प्रामाणिक ग्रंथ बनाती है। इसमें न केवल तथ्यात्मक सटीकता है, बल्कि तर्कों की स्पष्टता भी है। पुस्तक में स्पष्ट रूप से नवीनता है—यह गढ़वाली जैसी लोकभाषा को संरचना और सिद्धांत के धरातल पर लाकर उसे शैक्षणिक विमर्श का हिस्सा बनाती है। यह ग्रंथ न केवल शोधार्थियों, शिक्षकों, छात्रों और साहित्य प्रेमियों के लिए उपयोगी है, बल्कि गढ़वाली भाषा के संरक्षण और संवर्धन की दिशा में एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक प्रयास भी है।

लेखक द्वारा केवल गढ़वाली भाषा के व्याकरण की यांत्रिक व्याख्या नहीं की गयी बल्कि गढ़वाली भाषा को समाज, संस्कृति और चिंतन से जोड़ते हुए व्याकरण को प्रस्तुत किया गया है। लेखक का यह दृष्टिकोण इस कृति को परंपरागत व्याकरण से अलग बनाता है। व्यवहारिकता के निकट यह ग्रंथ लेखक की अंतर्दृष्टि और वर्षों की सोच और ख़ोज का परिणाम है, जिसमें भाषा के सतत परिवर्तनशील स्वभाव को स्वीकारते हुए विवेचनात्मक सीमाओं की भी चर्चा की गई है। लेखक भाषा को केवल संवाद का माध्यम नहीं, बल्कि सामाजिक अंतर्विरोधों, मानसिक संरचना और सांस्कृतिक विमर्श का उपकरण मानते हैं। लेखक ने भाषा के सतत परिवर्तनशील स्वभाव को स्वीकार करते हुए विवेचनात्मक सीमाओं की भी चर्चा है जो इस पुस्तक को गंभीर चिंतनशील रचना बनाती है। यह पुस्तक केवल तथ्य नहीं, भाव भी संप्रेषित करती है।

पुस्तक की भाषा साहित्यिक होते हुए भी सहज और बोधगम्य है, जिससे यह शोधार्थियों और सामान्य पाठकों दोनों के लिए सुपाठ्य बन जाती है। लेखक ने दार्शनिक गहराई और भाषावैज्ञानिक दृष्टि से विषय का विश्लेषण किया है। आत्मकथ्यात्मक शैली होने के बावजूद प्रस्तुति अनुसंधानपरक और ईमानदार है। कई स्थानों पर लेखक की विचारशीलता पाठक को भाषा, संस्कृति और समाज के अंतर्संबंधों पर पुनर्विचार के लिए प्रेरित करती है, जो इस कृति की महत्त्वपूर्ण विशेषता है।

पुस्तक में भाषा को केवल व्याकरणिक नियमों की सीमाओं में नहीं बाँधा गया है, बल्कि उसे सामाजिक अंतर्विरोधों, वर्ग-संरचना और जनचेतना से जोड़कर देखा गया है। लेखक का यह मानना अत्यंत सार्थक है कि कोई भी शास्त्र यदि समाज की जमीनी सच्चाइयों से कटा हुआ हो, तो उसकी प्रामाणिकता पर प्रश्नचिह्न लगना स्वाभाविक है। इस पुस्तक में वही दृष्टिकोण व्यावहारिक धरातल पर सफलतापूर्वक प्रस्तुत किया गया है। गढ़वाली जैसी लोकभाषाओं के संदर्भ में यह विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण हो जाता है, जहाँ भाषाई अस्मिता सीधे सांस्कृतिक अस्तित्व से जुड़ी हुई है। यह पुस्तक न केवल भाषा का विश्लेषण करती है, बल्कि सांस्कृतिक चेतना को भी जीवंत बनाती है।

यह पुस्तक शोधार्थियों, भाषा अध्यापकों, विद्यार्थियों तथा गढ़वाली भाषा-संवेदकों के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध होती है। इसमें गढ़वाली भाषा को सुव्यवस्थित, विश्लेषणात्मक और शिक्षणोपयोगी रूप में प्रस्तुत किया गया है, जिससे यह अकादमिक संदर्भों में सहज रूप से प्रयोज्य बन जाती है।

© Shiksha Samvad| Received: 03 September 2025 | Accepted: 06 September 2025 | Published: 11 September 2025

हालाँकि यह पुस्तक गढ़वाली भाषा के व्याकरणिक और सैद्धांतिक विश्लेषण का एक उत्कृष्ट प्रयास है, फिर भी इसमें कुछ सीमाएँ दृष्टिगोचर होती हैं। कुछ अध्यायों में उदाहरणों की संख्या अपेक्षाकृत कम है, जिससे छात्रों को कुछ अवधारणाएँ और अधिक सहजता से समझ में आ सकती थीं। यदि गढ़वाली भाषा के साथ देवनागरी के साथ-साथ रोमन लिप्यंतरण भी दिया गया होता, तो यह पुस्तक गैर-गढ़वाली पाठकों के लिए भी अधिक सुलभ बन सकती थी। पुस्तक की भूमिका को एक स्पष्ट 'भूमिका-पाठ' या 'प्रस्तावना' के रूप में सामने रखा जाए, तो पाठकों को लेखक की दृष्टि, उद्देश्य और पद्धति को बेहतर ढंग से समझने में सहायता मिल सकती है। इसके अतिरिक्त, यदि इसमें स्थानीय कथाओं, संवादों या उच्चारणों द्वारा जोड़ा जाए, तो यह ग्रंथ और अधिक संवादात्मक तथा जीवंत बन सकता है। यदि उत्तराखंड सरकार या शैक्षणिक संस्थान इस पुस्तक को विद्यालयों और महाविद्यालयों में अनुपूरक और गढ़वाली भाषा के सन्दर्भ पाठ्यपुस्तक के रूप में सम्मिलित करें तो न केवल क्षेत्रीय भाषाओं के संरक्षण को बल मिलेगा, बल्कि यह प्रयास भाषाई अस्मिता के संवर्धन में भी ऐतिहासिक भूमिका निभा सकता है।

'गढ़वाली भाषा और व्याकरण' सुरेश ममगाईं की वह महत्त्वपूर्ण कृति है जो गढ़वाली जैसी समृद्ध लोकभाषा को व्याकरण और सैद्धांतिक धरातल पर न केवल प्रतिष्ठित करती है, बल्कि समाज, संस्कृति और विचार की गहराइयों तक पहुँची हुई भाषा की भूमिका को भी उजागर करती है। यह पुस्तक निःसंदेह गढ़वाली भाषा के अध्येताओं के लिए एक अनिवार्य ग्रंथ है।

यह पुस्तक गढ़वाली भाषा को सैद्धांतिक धरातल पर स्थापित करने का एक प्रामाणिक प्रयास है, जिसमें भाषाविज्ञान और संस्कृति का सजीव समन्वय दिखाई देता है। लेखक ने उत्तर-आधुनिक विमर्श की चेतना के साथ समकालीन चिंतन को पुस्तक में समाहित किया है, जिससे यह कृति केवल भाषिक विश्लेषण तक सीमित न रहकर व्यापक बौद्धिक संवाद का माध्यम बन जाती है। परिशिष्ट में सम्मिलित छंद, अलंकार और शब्द-सूची जैसे संसाधन शोधार्थियों के लिए अतिरिक्त सहायक सामग्री प्रदान करते हैं। द्वितीय संस्करण को संशोधित और परिवर्धित करते हुए लेखक ने शोधार्थियों, भाषा-संवेदकों और शिक्षकों के सुझावों को समाहित किया है, जिससे यह पुस्तक एक स्थिर पाठ्यपुस्तक नहीं, बल्कि एक जीवंत और विकसित होती हुई रचना प्रतीत होती है। लेखक की यह स्वीकारोक्ति कि यह एक "अवगाहन" है, "समझ का अंतिम रूप" नहीं, इसे उत्तर-आधुनिक विचारधारा से जोड़ती है और ज्ञान के सतत विकास को स्वीकार करती है।

"गढ़वाली भाषा और व्याकरण" केवल एक पुस्तक नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक हस्तक्षेप है। यह गढ़वाली भाषा और व्याकरण की उस मौन आवाज़ को भाषित करती है, जिसे सदियों से प्रामाणिकता नहीं मिली। सुरेश ममगाईं की यह कृति गढ़वाली भाषा को न केवल एक शैक्षणिक ढांचे में रखती है, बल्कि उसे बौद्धिक विमर्श का हिस्सा भी बनाती है। यह पुस्तक उन सभी के लिए पठनीय, संग्रहणीय और विचारोत्तेजक है, जो भाषाओं को जीवित परंपराओं और सामाजिक चेतना के वाहक रूप में देखते हैं। यह पुस्तक गढ़वाली भाषा से परिचित छात्र एवं जिज्ञासुओ एवं लोक प्रशासको के लिए भी प्रस्तुत उत्तराखंडी संस्कृति को सीखने का माध्यम बन सकती है क्योंकि प्राय: गढ़वाली उदाहरणों के साथ हिंदी भाषा के उदाहरण भी सहजबोध के लिए दे दिए गए है।

Cite this Article:

डॉ० हरीश कुमार यादव, "गढ़वाली भाषा और व्याकरण *Shiksha Samvad International Open Access Peer-Reviewed & Refereed Journal of Multidisciplinary Research, ISSN: 2584-0983 (Online), Volume 03, Issue 01, pp.99-109, September 2025. Journal URL: https://shikshasamvad.com/*

This is an Open Access Journal / article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License CC BY-NC-ND 3.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited. All rights reserved

CERTIFICATE

of Publication

This Certificate is proudly presented to

डॉ० हरीश कुमार यादव

For publication of Book Review title

"गढ़वाली भाषा और व्याकरण"

Published in 'Shiksha Samvad' Peer-Reviewed and Refereed Research Journal and E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-03, Issue-01, Month September 2025, Impact-Factor, RPRI-3.87.

Dr. Neeraj Yadav
Editor-In-Chief

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Executive-chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at: https://shikshasamvad.com/